02 जनवरी 2023, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य :2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन
अरिहन्त चैनल पर
प्रात: 6:30 से 7:00 तक
Ptst Youtube पर
पुन: प्रसारण 2.30 से 3.00 तक
प्रात: 9 से 10 तक प्रवचनसार पर

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

वर्ष : 45, अंक : 19
जनवरी (प्रथम), 2023 (वीर नि. संवत्-2549)

संस्थापक सम्पादक : अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल
सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

सम्मेद शिखर को पर्यटन स्थल घोषित करने के विरोध में...

जयपुर में सकल जैन समाज का मौन जुलूस

सम्मेदशिखर को पर्यटन स्थल घोषित करने पर काली पट्टी पहनकर जताया विरोध

जयपुर (राज) : जैन धर्म के सर्वोच्च शाश्वत सिद्धक्षेत्र श्री सम्मेदशिखरजी को पर्यटन स्थल घोषित करने के विरोध में एवं पवित्र तीर्थ स्थल घोषित करने की मांग के तहत पूरे देश में चारों ओर विरोध का माहौल निर्मित हो रहा है।

इस परिस्थिति में शिक्षित जैन समाज अहिंसात्मक आंदोलन के माध्यम से आक्रोश व्यक्त कर रही है। इसी कड़ी में 25 दिसम्बर 2022 को भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं जैन श्वेताम्बर सोसायटी के निर्देशन में सकल जैन समाज (दिगंबर और श्वेतांबर) जयपुर के बैनर तले विशाल मौन जुलूस निकाला गया।

जयपुर के अग्रवाल कॉलेज से महावीर स्कूल तक निकले इस विशाल मौन जुलूस में बच्चों से लेकर वृद्धजनों तक सभी सम्मेद शिखर बचाओ की भावना से शामिल हुए। जुलूस में भीड का अन्दाजा इससे लगाया जा सकता है कि जुलूस का पहला छोर जब महावीर स्कूल पहुँचा तब अन्तिम छोर त्रिपोलिया बाजार में था, जिसमें लगभग 30 हजार से अधिक साधर्मी सम्मिलित हुए तथा सैकड़ों जैन बन्धु सीधे महावीर स्कूल पहुँच गए। जुलूस के अन्त में महावीर पब्लिक स्कूल के प्रांगण में भव्य धर्म सभा का आयोजन किया गया, जिसमें आचार्य सुनीलसागरजी ने समाज को सम्बोधित किया। जुलूस में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के सभी कार्यकर्त्ता एवं महाविद्यालय के समस्त विद्यार्थी उत्साह पूर्वक सम्मिलित हुए एवं डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा लिखित कृति शाश्वत तीर्थराज सम्मेद शिखर का 10,000 की संख्या में वितरण किया गया।

ज्ञानतीर्थ टोडरमल स्मारक की वसुंधरा पर...

ढाईद्वीप रथ का भव्य स्वागत

जयपुर : यहाँ 20 दिसम्बर 2022 को देश के विभिन्न नगरों में भ्रमणकर ढाईद्वीप रथ इंदौर में होने वाले पंचकल्याणक का आमंत्रण देते हुए ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन की वसुंधरा पर पहुँचा।

तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, श्री सुशीलकुमारजी गोदिका, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, श्री हीराचन्दजी वैद आदि अनेक विद्वानों एवं समाज के प्रतिष्ठित महानुभावों ने रथ का स्वागत किया।

समारोह में अन्तर्राष्ट्रीय विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का विशेष उद्बोधन प्राप्त हुआ तथा डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने उपस्थित जनसमुदाय को पंचकल्याणक में आमन्त्रित किया व पण्डित सुमितजी शास्त्री ने ढाईद्वीप जिनायतन का परिचय प्रदान किया।

द्वि-दिवसीय विशेष सेमिनार सम्पन्न

जयपुर : यहाँ 17 व 18 दिसम्बर 2022 को श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के तत्त्वावधान में द्वि-दिवसीय विशेष सेमिनार का आयोजन किया गया, जिसका संयोजन अर्हत्-वार्ता ने एवं निर्देशन डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील ने किया।

इस सेमिनार में विदुषी प्रज्ञाजी देवलाली एवं पण्डित जिनेशजी शास्त्री मुंबई ने 8 सत्रों में शोध की भूमिका व इतिहास, शोधक विद्वानों का परिचय, शोध में आधुनिक तकनीकियों का प्रयोग एवं वर्तमान में शोध की आवश्यकता आदि विभिन्न विषयों का परिज्ञान कराया। 19 दिसम्बर को समापन समारोह तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। सभा का संचालन पण्डित संयमजी शास्त्री नागपुर ने किया। आभार-प्रदर्शन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

नौवे अध्याय का सार (मोक्षमार्ग का स्वरूप)

आत्मा का हित मोक्ष ही है...

पण्डित टोडरमलजी द्वारा लिखित मुक्ति के मार्ग को बतलाने वाली परम उपकारी रचना मोक्षमार्ग प्रकाशक के अन्तिम अध्याय की चर्चा प्रसंग प्राप्त है। टोडरमलजी मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चारित्र का स्वरूप बतलाकर अब यहाँ यह कहते हैं कि आत्मा का हित मोक्ष में ही है। हमें हमारे दिलो-दिमाग में यह बात अच्छी तरह से बैठा लेनी है कि दुनियादारी के कामों में/संसार में/स्वर्ग में कहीं भी आत्मा का हित नहीं है।

आत्मा की विविध प्रकार की अवस्थाएँ होती हैं; परन्तु उन सभी अवस्थाओं में एक समानता है कि यह जीव सुख चाहता है और दुख से डरता है। सोना-उठना-बैठना, खाना-पीना सभी काम सुखी होने के लिये ही करता है। 24/7 जो भी काम करता है, उनका एक मात्र प्रयोजन सुखी होना ही है। पैसा कमाता भी सुखी होने के लिए है और खर्च भी सुखी होने के लिए ही करता है। अधिक क्या कहें यह जीव जीता भी सुखी होने के लिए है और मरता भी सुखी होने के लिए है। अर्थात् अपना अस्तित्व खोकर भी सुखी होना चाहता है।

आकुलता ही एक मात्र इस जीव के दु:खों का कारण है और वह आकुलता मोक्ष में नहीं है; इसलिए **आत्मा का हित मोक्ष ही है।**

आकुलता रागादि कषाय भाव होने पर ही होती है; क्योंकि यह रागादि के कारण पर द्रव्य हो अपने अनुसार परिणमित करना चाहता है और वे अपने अनुसार परिणामित न हों तब आकुलता होती है। यहाँ अब दो कार्य में से कोई एक हो तब आकुलता मिटे। पहला या तो अपने रागादि कषाय भाव दूर हो, उससे पर द्रव्य को अपने अनुसार परिणमित कराने की इच्छा ही न हो या फिर सर्व पदार्थों का परिणमन इसके अनुसार हो सो यह तो हो नहीं सकता; क्योंकि **किसी द्रव्य का परिणमन किसी द्रव्य के आधीन नहीं है।** अत: अपने रागादि दूर होने पर ही आकुलता दूर हो सकती है, अन्य कोई उपाय नहीं है। रागादिभाव मोहकर्म के निमित्त से होते है, उसका विलय हो तब आकुलता का नाश होता है।

ज्ञानावरण कर्म के उदय के कारण सभी पदार्थों का ज्ञान नहीं होता और इसे जानने की आकुलता बनी रहती है। अन्तराय कर्म के उदय में दान देने की इच्छा होने पर भी दान न कर सकने से आकुलता बनी रहती है। अघाति कर्मों के उदय में शरीरादि का संयोग होता है वह भी आकुलता के बाह्य सहकारी कारण हैं - इसप्रकार सर्व कर्म का नाश ही आत्मा का हित है और यह सभी कर्म मोक्ष में नहीं होते है इसलिए **आत्मा का हित मोक्ष ही है।**

यहाँ काई कहे कि संसार में भी तो पुण्य का उदय होने पर जीव सुखी देखा जाता है, इसलिए मोक्ष में ही सुख है ऐसा क्यों कहते हो? उससे कहते है कि संसारदशा में सुख सर्वथा है ही नहीं अर्थात् किसी भी प्रकार से सुख हो ही नहीं सकता। किसी को बहुत दु:ख होता है और किसी को थोड़ा दु:ख होता है सो थोड़े दु:ख वाले को सुखी कह दिया जाता है। पहले बहुत आकुलता थी अब पुण्य के उदय से आकुलता थोड़ी कम होने से अपने को सुखी मानता है। परमार्थत: तो संसार में सुख है ही नहीं। जैसे कोई व्यक्ति वजनदार सामान लेकर चल रहा था और हाथ दुखने से दु:खी हुआ; फिर हाथ बदलने पर शान्ति को अनुभव करता है। यहाँ वजन तो रंचमात्र भी कम नहीं हुआ; लेकिन भ्रम से अपने आप को सुखी हुआ मानता है। किसी को तीव्र ज्वर हो फिर बाद में मंद हो जाए तो सुख का अनुभव करता है; लेकिन मंद ज्वर को सुख का कारण तो नहीं कहा जा सकता। उसीप्रकार पुण्य के उदय में आकुलता कम होने से सुख का अनुभव करता है; लेकिन पुण्य को सुख का कारण तो नहीं कहा जा सकता।

आकुलता का घटना-बढ़ना भी बाह्य सामग्री के अनुसार नहीं है; अपितु कषायों के घटने-बढ़ने से होता है। जैसे किसी के पास थोड़ा धन है और उसे सन्तोष है तो आकुलता थोड़ी है एवं किसी को बहुत धन है और तृष्णा भी बहुत हो तो आकुलता बहुत है। तथा किसी को किसी ने बहुत बुरा कहा हो और उसे क्रोध नहीं हुआ तो आकुलता थोडी हुई एवं किसी को थोड़ा बुरा कहने से ही क्रोध आये तो उसे आकुलता बहुत होती है।

परद्रव्यरूप बाह्य सामग्री के अनुसार भी सुख दु:ख नहीं होता। कषाय से इच्छा उत्पन्न होती है, इच्छानुसार बाह्य सामग्री मिलने पर आकुलता घटने पर सुख होता है और इच्छानुसार बाह्य सामग्री नहीं मिलने पर आकुलता बढ़ने से दुख होता है। अर्थात् सुखी होना दुखी होना - सभी बातें आकुलता के होने/नहीं होने पर निर्भर करती हैं।

भवितव्य से इच्छानुसार कार्य हो भी जाए तो तत्काल अन्य आकुलता मिटाने के उपाय में लग जाता हैं। इसलिए इस जीव को आकुलता मिटाने की आकुलता तो निरन्तर बनी ही रहती है। अत: संसारदशा में आकुलता होती ही होती है।

मोक्ष अवस्था में किसी भी प्रकार की आकुलता नहीं होती है। 100% निराकुलता रहती है। इसलिए हे भव्य जन! यदि अपना हित चाहते हो तो मोक्ष का उपाय करो; क्योंकि **आत्मा का हित मोक्ष में ही है।**

पुरुषार्थ से ही मोक्ष प्राप्ति...

मोक्ष का उपाय काललब्धि आने पर भवितव्यानुसार बनता है, या मोहादि के उपशमादि होने पर बनता है या अपने पुरुषार्थ से उद्यम करने पर बनता है? यदि पहले दो कारणों से बनता है तो हमें पुरुषार्थ करने का उपदेश क्यों देते हो? यदि पुरुषार्थ से होता है तो उपदेश तो हर व्यक्ति सुनता है तो काम क्यों नहीं होता है?

सभी बातों का समाधान करते हुए कहते हैं कि एक कार्य के होने में अनेक कारण होते है। जहाँ मोक्षरूपी कार्य होता है, वहाँ यह सभी कारण मिलते ही हैं। काललब्धि भी होगी, भवितव्यता भी होगी और मोहादि के उपशम भी होंगे और पुरुषार्थ भी होगा।

अब इन सभी कारणों में वजनदार कारण कौन सा है, वह बता रहे हैं। काललब्धि और होनहार तो कोई वस्तु ही नहीं हैं, जिस काल में कार्य हो, वही काललब्धि है और जो कार्य हो रहा है, वही होनहार है। जो मोह कर्म के उपशमादि हैं, वह पुद्गल की शाक्ति हैं, जड़ की क्रिया है। सो आत्मा इनका कर्त्ता हो नहीं सकता तथा पुरुषार्थ आत्मा का कार्य है; इसलिये मोक्षप्राप्ति के लिए पुरुषार्थ का उपदेश देते हैं।

जिस कारण से कार्य की सिद्धि नियम से हो उसका उद्यम करना, वहाँ अन्य कारण स्वयमेव ही मिल जाते हैं और कार्य सिद्धि भी हो ही जाती है। इसलिए बुद्धिपूर्वक तो एकमात्र पुरुषार्थ ही करना है शेष तो स्वयमेव ही हो जायेंगे। जिनेन्द्र भगवान की वाणी में मोक्ष का जो उपाय बताया है, उसे जो करता है, उसके काललब्धि व होनहार भी होते हैं और कर्म के उपशमादि भी। इसलिए जो पुरुषार्थ से मोक्ष का उपाय करता है, उसको सर्व कारण मिलते ही हैं।

वह फिर कहता है कि उपदेश तो सभी सुनने है फिर मोक्ष का उपाय क्यों नहीं होता? पण्डितजी कहते हैं कि उसका कारण यह है कि तू उपदेश सुनने को ही पुरुषार्थ समझता है। उपदेश तो शिक्षा मात्र है, फल जैसा पुरुषार्थ करे वैसा लगता है। उपदेश सुनकर पुरुषार्थ करे तो मोक्ष का उपाय होता ही है।

यहाँ कोई कहे कि द्रव्यलिंगी मुनि तो मोक्ष के लिए घर-बार छोड़कर, 28 मूलगुणों का पालन करते हैं, तपस्या करते हैं; लेकिन उनके कार्य सिद्धि नहीं होती? उससे पण्डितजी कहते हैं कि अन्यथा पुरुषार्थ से फल चाहे तो कैसे सिद्धि हो? तपश्चरणादि व्यवहार साधन का अनुरागी होता है और उसे पुरुषार्थ समझता है, वह तो पुरुषार्थ है नहीं। बन्ध में पड़ा हुआ होने पर भी उसके फल में मोक्ष चाहे तो कैसे मिले? यह तो तेरा भ्रम ही है।

फिर वह कहता है कि भ्रम भी तो कर्म के उदय के कारण ही होता है? इसमें हम क्या करें? उससे कहते हैं कि सच्चे उपदेश से निर्णय करने पर भ्रम दूर होता है और निर्णय करने का पुरुषार्थ करने पर मोह कर्म का भी नाश होता है।

यहाँ वह कहता है कि आप निर्णय करने की बात कर रहे हो तो कर्म के उदय से निर्णय करने में भी तो उपयोग नहीं लगता।

उससे कहते हैं कि यदि तू एकेन्द्रियादिक होता तब तो विचार करने की शक्ति ही नहीं होती, उसमें तो कर्म को कारण मानते; परन्तु तुझे तो ज्ञानावरणादि का इतना क्षयोपशम है की तत्त्वविचार कर सके, उपयोग लगाने पर निर्णय करे सके; परन्तु अपने उपयोग को तत्त्वनिर्णय करने में न लगाकर अन्य संसार के कार्यों में लगता है, सो यह तेरा ही दोष है; तू व्यर्थ ही कर्म को दोष देता है।

दुनियादारी के कार्यों में, व्यापार के कार्यों में, घर परिवार के कार्यों में तो बहुत पुरुषार्थ करता है और जहाँ धर्म की, सम्यग्दर्शन की बात आती है, वहाँ कर्म को दोष देता है; इसमें तो तेरा ही दोष है। अत: तत्त्वनिर्णय करने में किसी कर्म का दोष है नहीं; परन्तु स्वयं महन्त बने रहना चाहता है और अपना दोष कर्मादि पर लगाता है; सो जिन आज्ञा माने तो ऐसी अनीति सम्भव नहीं है।

फिर वह कहता है कि आपकी सारी बातें सही हैं; परन्तु द्रव्यकर्म के उदय में भाव कर्म होता है और भाव कर्म के उदय में द्रव्यकर्म बन्धता है - इसप्रकार की परम्पर चलती रहती है, इसमें मोक्ष का उपाय कैसे हो? उससे कहते हैं कि कर्म का बन्ध व उदय सदा काल एक जैसा नहीं होता है। कभी तीव्र होता है, कभी मन्द होता है, उससे परिणाम भी तीव्र और मन्द होते हैं। मन्द परिणामों के समय में बन्धे हुए कर्म के फल में परिणाम और भी मन्द होते हैं। यदि कर्म का उदय सदा काल एक समान होता तो तेरी बात बन सकती थी; परन्तु ऐसा तो होता नहीं।

विचारशक्ति रहित जो एकेन्द्रियादिक हैं, उनके तो उपदेश समझने का ज्ञान ही नहीं हैं और तीव्र रागादि का उदय होने पर जीवों का उपयोग उपदेश सुनने में लगता नहीं है; इसलिए जो जीव विचार शक्ति सहित हैं और जिनके रागादि मन्द हैं, उन्हें उपदेश के निमित्त से धर्म की प्राप्ति होती है।

एकेन्द्रियादिक जीवों को तो धर्म साधन हो ही नहीं सकता; क्योंकि उनमें तो सामर्थ्य ही नहीं है। जो तीव्रकषायी हैं, वे पाप का ही पुरुषार्थ करते है; इसलिए उनके भी धर्म साधन नहीं हो सकता, इसलिए जब कषाय मन्द हो, रागादि कम हो, परिणाम निर्मल हों तब तत्त्व उपदेश में उपयोग लगाये तो उपयोग लगता भी है और भला भी होता है - इसी अवसर पर पुरुषार्थ कार्यकारी होता है। यदि इस समय में भी मन्द रागादि में ही प्रवर्ते, विषय कषायों में ही लगा रहे या व्यवहार धर्म में ही प्रवर्तन करे तो संसार में ही रुलेगा। इसी सम्बन्ध में आगे और भी अनेक बातें कहेंगे। **(क्रमश:)**

सर्वोदय अहिंसा ट्रस्ट जयपुर के नवीनतम उपक्रम में...

विशिष्ट सम्मान से सम्मानित समाज के विशिष्ट विद्वान

सर्वोदय अहिंसा ट्रस्ट जयपुर के तत्त्वावधान में दिनांक 23 दिसम्बर 2022 को ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में मुमुक्षु समाज के विशिष्ट विद्वानों को उनके ही धर्मपिता अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के करकमलों से** विशिष्ट सम्मान से सम्मानित किया गया। विद्वानों को सम्मान स्वरूप प्रशस्ति-पत्र, श्रीफल, शॉल, सत्साहित्य एवं स्मृति चिह्न भेंट किए गए। प्रशस्ति पत्र का वाचन डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील ने किया। ये सम्मान श्री सुशीलकुमारजी गोदीका, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित संजयजी सेठी, डॉ. दीपकजी शास्त्री वैद, श्री ताराचन्दजी सोगानी, श्री अखिलजी USA, श्री हीराचन्दजी वैद, पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर, पण्डित निलयजी शास्त्री आगरा, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री आगरा आदि की उपस्थिति में प्रदान किये गये। सभा का संचालन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री एवं पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री ने तथा मंगलाचरण सुश्री श्वेतलजी जैन राजकोट ने किया।

सभाध्यक्ष डॉ. भारिल्ल ने कहा कि आज जिन विद्वानों को सम्मानित किया गया है, वे जैन दर्शन के कितने ठोस विद्वान हैं और समाज में कितने प्रतिष्ठित हैं - इस बात को मैं भली-भाँति जानता हूँ। सभी विद्वान एक से बढ़कर एक हैं और मैं इन सभी से नज़दीकी से जुड़ा हुआ हूँ।

सभी विद्वानों ने प्राप्त सम्मान को पूर्ववर्ती आचार्यों एवं विद्वानों को समर्पित किया एवं जीवनभर आत्मकल्याण की भावना के साथ माँ जिनवाणी की सेवा में तत्पर रहकर तत्त्वज्ञान के क्षेत्र में लगे रहने की प्रबल भावना व्यक्त की।

सम्मानित विद्वानों को 11,000 की राशि श्रीमती प्रीति-संजयजी जैन बड़ामलहरा ने प्रदान की एवं कार्यक्रम का समस्त व्यय भी आपके द्वारा ही किया गया। समस्त आयोजन पण्डित संजयजी बड़ामलहरा के निर्देशन में शाश्वत शास्त्री, संयम शास्त्री व दिव्यांश शास्त्री के सहयोग से हुआ।

जैनपथ प्रदर्शक एवं टोडरमल स्मारक परिवार इस कार्य की अनुमोदना करता है एवं सम्मानित विद्वान तत्त्वप्रचार के साथ-साथ आत्मकल्याण की ओर अग्रसर हो - ऐसी भावना व्यक्त करता है।

आध्यात्मिक भजन संध्या

इस अवसर पर सायं 6.30 बजे से अन्तर्ध्वनि भजन संध्या का आयोजन किया गया, जिसमें दिल्ली से पधारे सुप्रसिद्ध भजनकार श्री संजीवजी जैन उस्मानपुर ने अपने मधुर कण्ठ से अध्यात्मरस से सराबोर अनेक भजन प्रस्तुत किए। सभी भजन रंग-राग से कोसों दूर वीतरागता का संदेश दे रहे थे। अत: भजनों ने सभासदों के मन को मोह लिया।

पण्डित अरुणजी शास्त्री (बण्ड) जयपुर को करणानुयोग व न्याय के गहन अध्ययन-अध्यापन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु **तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंद भारिल्ल सम्मान** से सम्मानित किया गया। आप करणानुयोग मिश्रित अध्यात्म शैली के प्रवचनकार हैं एवं स्नातक विद्वानों में एकमात्र व्याकरणाचार्य हैं। आपके द्वारा लिखित चार पुस्तकें अभी तक प्रकाशित हो चुकी हैं।

पण्डित सुनीलजी शास्त्री जैनापुरे (राजकोट) को गुरुदेवश्री कानजीस्वामी द्वारा प्राप्त तत्त्वज्ञान को जन-जन तक पहुँचाने हेतु **आध्यात्मिक सत्पुरुष कानजीस्वामी सम्मान** से सम्मानित किया गया। आप जैन कुल में जन्म नहीं लेने पर भी जैन दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान हैं एवं गुरुदेवश्री के अनन्य भक्त हैं। आप हिंदी, संस्कृत-प्राकृत, गुजराती, मराठी, कन्नड़, अँग्रेजी भाषाविद् हैं।

पण्डित संजीवजी जैन उस्मानपुर को आध्यात्मिक भजनों के माध्यम से जैन धर्म के मूल सिद्धान्तों को जन-जन के कण्ठ में बसाने के लिए **पण्डित दौलतराम सम्मान** से सम्मानित किया गया। आपने अभी तक 100 से अधिक आध्यात्मिक भजन लिखे हैं, जो आपके ही मधुर-स्वर में अन्तर्ध्वनियों के माध्यम से जन-जन के कण्ठ का हार बने हुए हैं।

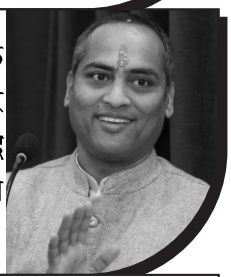

डॉ. मनीषजी शास्त्री (रहली) मेरठ को वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान देने एवं सामाजिक स्तर पर प्रभावक शैली में नियमित प्रवचन करने हेतु **तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंद भारिल्ल सम्मान** से सम्मानित किया गया। आप जैनदर्शन के उभरते हुए विद्वान हैं तथा निरन्तर तत्त्व प्रचार की गतिविधियों में संलग्न हैं।

पण्डित विक्रांतजी पाटनी झालरापाटन को पण्डित टोडरमलजी द्वारा लिखित मोक्षमार्ग प्रकाशक ग्रन्थ पर विशेष शोध कार्य करने व मोक्षमार्ग प्रकाशक के पुन: प्रकाशन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने हेतु **पण्डित प्रवर टोडरमल सम्मान** से सम्मानित किया गया। आपने अभीतक अप्रकाशित अनेक पांडुलिपियों के आधार से अनेक नवीन विषयों पर व्याख्यान किए हैं।

महाविद्यालय स्थल

सा विद्या या विमुक्तये

धैर्य एक अनुपम शक्ति

जीवन में लोगों को परिस्थितियों के हिसाब से बहुत कुछ रखने की सलाह दी जाती है। जैसे बरसात में छाते की; परन्तु इन सब चीजों से थोड़ी अलग धैर्य एक ऐसी चीज है; जो हर व्यक्ति को, हर समय, हर जगह रखना चाहिए।

धैर्य में न किसी स्थान विशेष की छूट है, न तो समय विशेष की और न ही व्यक्ति विशेष की। धैर्य में बोझा भी बिल्कुल नहीं है, वह किसी को थकाता नहीं। धैर्य में उम्र का लिहाज भी नहीं है; छोटा बच्चा भी रख सकता है और अधिक उम्रदराज भी। धैर्य कोई एकदम महीन वस्तु भी नहीं है; जिसे सम्भाल कर रखना पड़े। न इस धैर्य को खरीदने के लिए धन की आवश्यकता है - इन सभी कारणों से यह अत्यन्त सुलभ वस्तु है; चूँकि यह धैर्य इतनी सरल, सहज, बोझरहित और सुलभ वस्तु है। अत: सभी को इसे अपने साथ अवश्य ही रखना चाहिए।

यदि धैर्य को साथ नहीं रखा तो पारिवारिक, सामाजिक आदि न जाने तरह-तरह की गम्भीर और बेइलाज समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। इसे न रखने का प्रारम्भिक परिणाम असफलता और हार तो है ही; अन्तिम परिणाम मृत्यु भी हो सकता है।

अस्तु, **किसी भी परिस्थिति में सोच-विचारकर, थोड़ा रुककर, सरलता और सहजता से निर्णय लेने की प्रक्रिया ही धैर्य है।**

कालिदास कहते हैं कि **विकार हेतो सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीरा:** अर्थात् वास्तव में वे ही पुरूष धीर हैं, जिनका मन विकार उत्पन्न करने वाली परिस्थिति में भी विकृत नहीं होता।

धैर्य कमाने के लिए कुछ अलग से नहीं करना, थोड़ा धैर्य तो जन्म से सबके अन्दर होता ही है। अब उसी थोड़े धैर्य को धारण करके विविध प्रकार की कठिन और सरल परिस्थितियों में और अधिक धैर्य धारणकर उसकी बढोत्तरी करनी है और पूर्ण धैर्य कमाकर धैर्यवान बनना है।

धैर्य धारण करने की आवश्यकता केवल गर्म मिज़ाज वाले व्यक्ति को ही नहीं है; बल्कि सरल व्यक्ति को भी है; क्योंकि वह सरल, धैर्यशाली होकर ही बना है। जैसे कोई धनवान धैर्य न रखे तो वह धन आदि खर्चकर कंगाल हो जाएगा। उसीतरह कोई निर्धन धैर्य धारण न करे और निराश हो जाए तो कुछ कमा न सकेगा। अत: सरल और गरल दोनों को ही धैर्य की अत्यन्त आवश्यकता है। असली योद्धा मात्र वह नहीं जो वार कर सकता हो; बल्कि वह है जो किए हुए वार को सह सके। असली नायक वही है जो धीर अर्थात् धैर्यवान हो। नायक में यदि धीरता हो तो ही वह नायक है अन्यथा; नहीं। कहते भी हैं कि सच्ची जीत वही पा सकता है जो हार को पचाने की ताकत रखता हो। वीरता से कोई लड़कर जीत सकता है, पर धीरता से बिना लड़े, बिना खून-खराबे के ही जीत सकता है। इतना ही नहीं महापुरूषों के लक्षण में सर्वप्रथम धैर्य को ही स्थान प्राप्त है। धैर्यवान होना महापुरुष बनने की पूर्व प्रक्रिया है।

धैर्य की महिमा बहुत है; धैर्य से बिगड़ता काम बन सकता है, उलझती बात सुलझ सकती है और टूटती वस्तु जुड़ सकती है।

धैर्य के लिए बस इतना करना कि विपत्ति आए तो आज मेरा दिन अच्छा नहीं था। यदि सम्पत्ति अर्थात् अत्यधिक सुख आए तो आज मेरा दिन है, कल को वह चला न जाए - ऐसा सोचकर धीर रहना। ऐसा विचार करना होगा कि वाकई में ऐसा ही होना होगा इसलिए हुआ है; इसमें अधीरता की कोई आवश्यकता नहीं। तब आपको धैर्यवान होने से कोई नहीं रोक सकता। धैर्य एक अनुपम शक्ति है। थोड़ा-सा धैर्य ढेर सारी बुद्धि से अधिक मूल्यवान है। धैर्य एक ऐसी चीज है जो हमें अपनी योग्यता से भी अधिक दिला सकने की सामर्थ्य रखता है। **- अरविन्द जैन, खड़ैरी (शास्त्री तृतीय वर्ष)**

पंचकल्याणक ढाईद्वीप में ...

आओ रे आओ मिल गाओ रे गाओ सब मिल नाचो आज।
पंचकल्याणक ढाईद्वीप में।।

इंदौर नगर की पावन वसुधा विश्व पियेगा अध्यातम सुधा।
बना भव्य जिनालय राज पंचकल्याणक ढाईद्वीप में।।
आओ रे आओ।।1।।

आदिप्रभु का मंगल उत्सव हर्षित हैं नर-नारी हम सब।
होगा आदर्श उत्तम काज पंचकल्याणक ढाईद्वीप में।।
आओ रे आओ।।2।।

ग्यारह सौ तैतालीस बिम्ब दर्शाते अपना चिद्बिंब।
ध्यावें हम अकृत्रिम भाव पंचकल्याणक ढाईद्वीप में।।
आओ रे आओ।।3।।

जन-जन की है यही भावना होवे जिन शासन प्रभावना।
होगा तत्त्वज्ञान गुंजान पंचकल्याणक ढाईद्वीप में।।
आओ रे आओ।।4।।

आत्मानुभूति का मंगल क्षण है नाश करेंगे जनम-मरण है।
बनें हम भी स्वयं भगवान पंचकल्याणक ढाईद्वीप में।।
आओ रे आओ।।5।।

- समकित शास्त्री खनियांधाना

• महाकाव्य : भरत का अन्तर्द्वन्द्व •

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

गतांक से आगे...

तृतीय अध्याय

(वीर)

सभी तरह की सुख-सुविधायें तभी मिलेंगी जन-जन को।
जब भरतक्षेत्र विकसित होगा तब शांति मिलेगी जन-जन को।
यह भारत जब होगा अखण्ड तब ही इसका विकास होगा।
विकसित होने पर जन-जन को रे इसका लाभ प्राप्त होगा।।

चक्ररत्न की उपलब्धि ने हमें जगाया है मानों।
यह काम हमें ही करना है यह हमें जताया है मानों।।
यदि नहीं करेंगे हम तो फिर यह कौन करेगा बतलाओ।
रे हाथ हिलाकर बुला रहा आओ आओ आओ आओ।।

कर्मभूमि विकसित करने की जिम्मेदारी हम सबकी।
क्योंकि विकास की सभी प्रक्रिया कुलकर करते आये हैं।।
नाभिराय कुलकर ने अबतक अरे बहुत कुछ काम किया।
ऋषभदेव ने उसे बढ़ाया बाकी करना है हमको।।

टुकड़ों-टुकड़ों में बँटी भूमि को हमें एक करना होगा।
भरतक्षेत्र के खण्डों को रे हमें एक करना होगा।।
फिर अखण्ड यह भरतभूमि पूरी विकसित करनी होगी।
खेतों अर खलिहानों को भी हरा-भरा करना होगा।।

पूरव-पश्चिम उत्तर-दक्षिण सब जगह लोग आवें-जावें।
इसलिये जुटानी होंगी सब आने-जाने की सुविधायें।।
मार्गों का निर्माण कराना होगा सारे भारत में।
रे विकास के कार्य कराने होंगे सारे भारत में।।

दिग्विजय यात्रा नहीं भरत की इच्छा पूरी करने की।
रे चक्रवर्ती बन जायें भरत यह नहीं बात बस इतनी ही।।
कर्मभूमि का हो विकास अर भरतभूमि भी विकसित हो।
सबको विकास की राह मिले आराम प्राप्त जन-जन को हो।।

सारे जन अपने जीवन को विकसित करने की राह चुनें।
अपने पथ का निर्माण करें अपने विकास का काम करें।।
सबको सुविधायें मिलें सभी सब अपने मन का काम चुनें।
सबको पूरी आजादी हो जो चाहें वे बस वही बनें।।

भरत बनें सम्राट बात बस इतनी नहीं समझना तुम।
भरतक्षेत्र के सभी नागरिक सब सुविधायें प्राप्त करें।।
बस यही चाहता हूँ मैं तो ना कोई सुविधाहीन रहे।
रोटी कपड़ा अर मकान की नहीं किसी को कमी रहे।।

है नहीं भावना मेरी यह सब दुनियाँ मेरे वश में हो।
मैं तो बस यही चाहता हूँ यह सारा जग स्वाधीन रहे।।
सब मिलकर सम्पूर्ण क्षेत्र को विकसित कर सम्पन्न बनें।
रे विकास के कामों में सारे जन भागीदार बनें।।

इस यात्रा में सहयोग करें, सहयोग करें समझाने में।
इस भरतक्षेत्र को एक अखण्डित करने और कराने में।।
जब हम सब होंगे एक हमारा भरतक्षेत्र विकसित होगा।
हम सब होंगे सम्पन्न हमारा मन भी आनन्दित होगा।।

हम यही चाहते हैं कि आप प्रस्ताव हमारा स्वीकारें।
अर विकास के कामों में भी हाथ बँटाना स्वीकारें।।
अरे आज के ही समान सब राज्य व्यवस्था आप करें।।
बनें हमारे सहयोगी सब, सब कामों में साथ रहें।।

यों पूर्व दिशा के सभी नरेशों के दिल मीठे बोलों से।
जीता भरतेश्वर ने सबको मीठे-मीठे सम्बोधन से।।
सबने उनका आतिथ्य किया अर लाद दिया है हारों से।
अर अपनी बहिन-बेटियाँ दी सन्मान किया उपहारों से।।

इसतरह भरत ने राजाओं को अपनेपन से मोड़ लिया।
सम्बन्ध बनाकर प्रेमभाव से नजदीकी से जोड़ लिया।।
सबको अपना पक्का साथी अर हित का चिन्तक बना लिया।
लड़कर मिल सकता नहीं कभी अपनाकर वह सब प्राप्त किया।

(क्रमशः)

प्रश्नोत्तरमाला

25 समयसार अनुशीलन के आधार से

– डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया

(गतांक से आगे...)

प्रश्न : सभी इन्द्रियों को जीतने से क्या तात्पर्य है?

उत्तर : ज्ञायक स्वभावी आत्मा इन इन्द्रियों से अत्यन्त भिन्न है, एकत्व में टंकोत्कीर्ण है, अविनश्वर है, प्रत्यक्ष उद्योतपने से सदा अंतर में प्रकाशमान है, स्वत:सिद्ध एवं परमार्थ स्वरूप है - यह अनुभवपूर्वक जानकर-मानकर उस आत्मा में ही अपनापन हो जाना, उसमें ही जम जाना, रम जाना ही इन्द्रियों को जीतना है।

प्रश्न : प्रथम प्रकार की यह निश्चय स्तुति किस दोष के परिहार पूर्वक होती है?

उत्तर : प्रथम प्रकार की यह निश्चय स्तुति ज्ञेय-ज्ञायक संकर दोष के परिहार पूर्वक होती है, इसे ही जघन्य निश्चय स्तुति कहते है।

प्रश्न : ज्ञेय-ज्ञायक संकर दोष से क्या तात्पर्य है?

उत्तर : ज्ञेय अर्थात् जानने में आने वाले पदार्थ। जानने में आने वाले ज्ञेय पदार्थ दो प्रकार के हैं -1. परज्ञेय और 2. स्वज्ञेयज्ञायक अर्थात् जानने देखने के स्वभाव वाला आत्मा।

आत्मा का स्वभाव स्वपरप्रकाशक होने से वह पर को भी जान सकता है और स्व को भी। जानने वाला आत्मा अलग है और जानने में आने वाले पर पदार्थ अलग हैं, इन्द्रियाँ अलग हैं - यह न जानकर इन्द्रियों को ज्ञायक जानना और इन्द्रियों के विषयों को ज्ञेय जानना तथा ज्ञायक आत्मा को जानना ही नहीं ज्ञेय-ज्ञायकसंकर दोष है तथा आत्मा और तीन प्रकार की इन्द्रियों को एकमेक मानना, इनमें कोई भेद नहीं कर पाना भी ज्ञेय-ज्ञायकसंकर दोष है।

प्रश्न : ऐसे कौन से परज्ञेय हैं, जिन्हें ज्ञायक मान लिया जाता है?

उत्तर : इन्द्रियाँ ऐसी परज्ञेय हैं, जिन्हें ज्ञायक मान लिया जाता है।

प्रश्न : ज्ञेय-ज्ञायकसंकर दोष का परिहार कैसे होता है?

उत्तर : तीनों प्रकार की इन्द्रियों को ज्ञेय जानकर आत्मा को उनसे भिन्न जानने, मानने, अनुभव करने से ज्ञेय-ज्ञायकसंकर दोष का परिहार होता है।

प्रश्न : तीर्थंकरों की आत्मा के गुणों के आधार पर की गई वचनात्मक स्तुति किस नय की स्तुति है और क्यों?

उत्तर : तीर्थंकरों की आत्मा के गुणों के आधार पर की गई वचनात्मक स्तुति गुणभेद के आधार पर की गई होने से सद्भूत व्यवहारनय की स्तुति है। **(क्रमश:)**

'कोरोना योद्धा सम्मान' प्राप्त डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री

उदयपुर (राज.) : यहाँ 15 दिसम्बर को पारस हॉस्पिटल की तीसरी वर्षगांठ पर दैनिक भास्कर समूह के रेडियो पार्टनर 94.3 My FM² की ओर से सलाम 3 सम्मान कार्यक्रम के तहत अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन राजस्थान के प्रदेशाध्यक्ष एवं भाजपा आपदा राहत एवं सहयोग विभाग राजस्थान के प्रदेश संयोजक डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री को कोरोना की प्रथम व द्वितीय लहर में जन सेवा हेतु **कोरोना योद्धा सम्मान** से सम्मानित किया गया। यह सम्मान श्री ताराचन्दजी मीणा, श्री आनन्दजी शर्मा, श्रीमती नन्दिताजी भट्ट, श्री आर.एल. सुमन एवं श्री शंकरजी खराडी के हस्ते प्रदान किया गया। ज्ञातव्य है कि आप श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक विद्वान हैं। जैन पथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

प्रथम वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

आरोन-गुना : यहाँ दिनांक 20 से 24 दिसम्बर 2022 तक श्री पंचबालयति दिगम्बर जैन मन्दिर के 2021 में सम्पन्न पंचकल्याणक के प्रथम पंच-दिवसीय वार्षिकोत्सव का भव्य आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: प्रवचनसार, समयसार, नियमसार एवं नेमिनाथ पंचकल्याणक विधान का आयोजन किया गया। साथ ही पण्डित श्रेणिकजी जबलपुर के प्रात: समयसार, दोपहर में द्रव्यदृष्टि-प्रकाश एवं रात्रि में मोक्षमार्ग प्रकाशक ग्रन्थ के आधार से प्रवचनों का लाभ मिला। विधान में पण्डित अशोकजी शास्त्री मांगुलकर का विशेष सहयोग रहा। रात्रि में इन्द्रसभा, राजसभा के माध्यम से तत्त्वचर्चायें एवं पंचकल्याणक की झलकियाँ दिखाई गईं।

शोक संदेश

गढ़ाकोटा निवासी **श्री माखनलालजी जैन** (पुलिस इन्सपेक्टर) का दिनांक 25 दिसम्बर 2022 को देहवियोग हो गया। दिवंगत आत्मा शीघ्र अभ्युदय को प्राप्त हो - यही भावना है।

जैन शास्त्र, भक्ति गीत, तीर्थ दर्शन व पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य व अनेक जानकारियों के लिये vitragvani app Download करें या Visit करें - www.vitragvani.com
विविध चित्रों के लिए Visit करें - www.gurukahanartmusuem.org
Daily updates :- vitragvani vitragvani Telegram
संपर्क सूत्र - श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा 2022 में 300 से अधिक दिन धर्मप्रभावना

25 दिसम्बर से 1 जनवरी 2022 तक इन्द्रध्वज मण्डल विधान हेतु ढाईद्वीप जिनायतन **इंदौर** में, 1 जनवरी को **किशनगढ़** में, 2 जनवरी को **जयपुर** में, 3 व 4 जनवरी को विधान व प्रवचन हेतु **करहल, फिरोजाबाद** व **आगरा** में, 9 से 14 जनवरी तक कल्पद्रुम मण्डल विधान हेतु **कोलारस** में, 15 जनवरी को प्रातः **रत्नौद** में, 15 जनवरी सायं को कम्प्यूटर लैब का उद्घाटन हेतु **खनियांधाना** में, 16 से 19 जनवरी तक समयसार कलश विधान, कीर्तिस्तम्भ स्थापना हेतु **शिवपुरी** में, 19 जनवरी रात्रि को **बदरवास**, 20 से 22 जनवरी तक कीर्तिस्तम्भ स्थापना हेतु **गुना (वीतराग-विज्ञान)** में, 22 व 23 जनवरी को **कोटा** में, 22 से 24 जनवरी को **JAANA शिविर** में (ऑनलाइन), 25 जनवरी को सेमिनार हेतु संस्कृत कॉलेज **सांगानेर** में, 5 फरवरी को आचार्य कुंदकुंद की जन्म जयंती पर **तेरापंथी पंचायती जैन मंदिर**, 20 एवं 21 फरवरी को **जैन सोसाइटी ऑफ ह्यूस्टन** द्वारा विशेष सेमिनार, 24 से 26 फरवरी तक वार्षिकोत्सव हेतु **जयपुर** में, 28 फरवरी से 4 मार्च तक तृतीय वार्षिकोत्सव हेतु **दाहोद** में, 10 मार्च से 18 मार्च तक अष्टाह्निका महापर्व पर **अजमेर** में, 25 से 27 मार्च तक ब्राह्मी सुंदरी विद्या निकेतन **दिल्ली** में, 27 शाम व 28 मार्च को शिवाजी पार्क **दिल्ली** में, 3 से 10 अप्रैल इंद्रध्वज महामंडल विधान के अवसर पर **जसवंत नगर** में, 14 से 17 अप्रैल तक अर्हं फेस्ट पर **जयपुर** में, 26 अप्रेल विदाई समारोह पर टोडरमल दिगंबर जैन सिद्धांत महाविद्यालय **जयपुर** में, 1 मई गुरुदेवश्री की जन्म जयंती **जयपुर** में, 4 से 6 मई वेदी शिलान्यास पर विदिशा में, 6 मई शाम को **बेलगांव** में, 7 से 11 मई तक **हेरले** में, 12 मई को **कोल्हापुर** में, 13 मई से 1 जून तक प्रशिक्षण शिविर हेतु **देवलाली** में, 2 जून विद्यानंद सभागृह **दिल्ली** में, 02 से 09 जून तक **टोरंटो** में, 10 से 13 जून तक ह्यूस्टन में, 14 जून से 21 जून तक डलास में, 21 से 25 जून तक **राले-नार्थ कैरोलिना** में, 26 जून को प्रातः **अटलांटा** में, 26 से 31 जून तक **मयामी** में, 01 से 05 जुलाई तक **शिकागो** में, 7 जुलाई को प्रातः विद्यानंद सभागृह **दिल्ली** में, 7 से 13 जुलाई अष्टाहनिक महापर्व पर **जबलपुर** में, 14 से 17 जुलाई विधान व विद्वत संगोष्ठी पर **फिरोजाबाद** में, 31 जुलाई से 7 अगस्त 45वें अध्यात्मिक शिक्षण पर **जयपुर** में, 14 व 18 अगस्त ढाईद्वीप विधान पर **इंदौर** में, 19 से 21 अगस्त तक यूथ शिविर पर **ज्ञानोदय भोपाल** में, 22 अगस्त को **भोपाल** में, 26 से 30 अगस्त श्वेतांबर पर्यूषण पर्व पर **मुंबई** में, 31 अगस्त से 13 सितंबर तक दशलक्षण महापर्व पर **औरंगाबाद** में, 16 से 18 सितम्बर तक विद्वत-संगोष्ठी पर **भट्टारकजी की नसिया** व **मालवीय नगर** में, 19 से 25 सितंबर तक सत्पथ का ग्रैंड फिनाले **चैतन्यधाम**, 1 अक्टूबर **भीलवाड़ा** में, 2 से 9 अक्टूबर तक शिक्षण शिविर **जयपुर** में, 12 से 16 अक्टूबर तक **महावीर जिनालय सागर** में, 17 से 18 अक्टूबर तक तारण तरण चैत्यालय **सागर** में, 21 अक्टूबर से 27 अक्टूबर तक दीपावली पर्व के अवसर पर **मंगलायतन** में, 28 अक्टूबर सायं से 30 अक्टूबर सुबह तक **महावीर जिनालय नागपुर** में, 30 अक्टूबर सायं से 07 नवम्बर सुबह तक अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर **कारंजा** में, 07 नवम्बर को सायंकाल **एम्प्रेस सिटी नागपुर** में, 08 नवम्बर से 10 नवम्बर सुबह तक पंचकल्याणक महोत्सव पर **उदयपुर** में, 10 सायं व 11 नवम्बर सुबह तक **नवरंगपुरा-अहमदाबाद** में, 11 सायं से 13 नवम्बर सुबह तक **राजकोट** में, 13 नवम्बर सायं व 14 नवम्बर को **गिर** में, 15 से 19 नवम्बर तक आध्यात्मिक शिविर के अवसर पर **गिरनारजी** में, 27 नवम्बर से 6 दिसम्बर तक **अबूधाबी, दुबई**-UAE में, 10 से 15 दिसम्बर तक **इन्दौर** में, 21 दिसम्बर को **बैंगलोर** में, 22 से 25 दिसम्बर तक **श्रवणबेलगोला** में, 25-26 दिसम्बर को **बैंगलोर** में, 27 से 31 दिसम्बर 2022 तक **दीवानगंज भोपाल** में तत्त्वप्रचारार्थ रहे। अन्य दिनों में सफर एवं टोडरमलजी के मन्दिर **जयपुर** में व्याख्यान।

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

प्रकाशक व मुद्रक : ब्र. यशपाल जैन द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458, 7412078704
E-Mail : veetragvigyanjpp@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 28 दिसम्बर 2022

प्रति,

जैन पथप्रदर्शक (पाक्षिक) वर्ष-45 अंक-19, 02 जनवरी 2023

॥ श्री आदिनाथाय नमः॥

श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन शासन प्रभावना ट्रस्ट इन्दौर द्वारा आध्यात्मिकसत्पुरुषश्रीकानजीस्वामी के पुण्य प्रभावना योग में निर्मित

विश्व की अद्वितीय रचना तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर के निर्देशन में

आचार्य धरसेनदेव

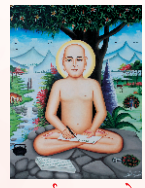

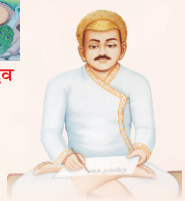

आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी

श्रीमज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव

आचार्य कुन्दकुन्ददेव

आध्यात्मिकसत्पुरुषश्रीकानजीस्वामी

शुक्रवार, दिनांक 20 जनवरी से गुरुवार, 26 जनवरी 2023

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन

सद्धर्मप्रेमी जिनधर्मवत्सल साधर्मी महानुभाव,

अत्यन्त प्रमुदित हृदय के साथ आपको यह महामांगलिक आमंत्रण भेज रहे हैं कि दिगम्बर जैनधर्म के साक्षात मोक्षमार्ग स्वरूप आध्यात्मिक रहस्यों को उदघाटित करने वाले आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के पुण्य प्रभावना योग में विश्व की सर्वप्रथम और अद्वितीय रचना तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन का जैन भूगोल के अनुसार इंदौर मध्यप्रदेश में निर्माण हुआ है। इस नवनिर्मित ढाईद्वीप जिनायतन में निर्मल स्फटिक मणि के 33" पद्मासन श्री सीमंधर स्वामी के जिनबिम्ब सहित कुल 1164 जिनबिम्बों की विधिपूर्वक प्रतिष्ठा करने हेतु शुक्रवार 20 जनवरी से गुरूवार 26 जनवरी 2023 तदनुसार माघ कृष्ण चतुर्दशी से माघ शुक्ल पंचमी तक श्रीमद्‌जिनेन्द्र आदिनाथ पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव का मंगलमय आयोजन होने जा रहा है। श्री ढाईद्वीप जिनायतन को मूर्तरूप देने में अविस्मरणीय भूमिका निभाने वाले जैन दर्शन के मूर्धन्य विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की गौरवमयी उपस्थिति इस समारोह की विशेष शोभा होगी।

हम सभी को यह विदित ही है कि इस ट्रस्ट के संस्थापक ट्रस्टी ढाईद्वीप जिनायतन के स्वप्न दृष्टा श्री मुकेश जैन के भागीरथी प्रयासों एवं दानवीर स्व. श्री रसिकलाल माणिकचंद धारीवाल के प्रारंभिक आर्थिक सहयोगों के फलस्वरूप ही यह जिनायतन आज जिनशासन के क्षितिज पर शोभायमान हो रहा है।

महामहोत्सव की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा विधि को प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. अभिनंदनकुमार शास्त्री, खनियाँधाना उपप्रतिष्ठाचार्य पण्डित रमेशचन्द बाँझल इंदौर, डॉ. संजीवकुमार गोधा जयपुर अपने सहयोगी ब्रह्मचारी विद्वानों इसमें सर्वश्री बाल ब्र. विद्वान सुकमाल झांझरी उज्जैन, नन्हेभैया सागर, सुनील शास्त्री शिवपुरी, महेन्द्र शास्त्री अमायन, श्रेणिक जैन जबलपुर, डॉ. मनोज जैन जबलपुर, वीतराग जैन अकलूज, अमित जैन विदिशा, इन्जी. राजीव जैन जबलपुर, इन्जी. संयम शास्त्री नागपुर, सत्येन्द्र जैन मौ, रवि जैन ललितपुर, निखिल जैन मुम्बई, विनोद जैन खेकड़ा, सुरेन्द्र जैन खनियाँधाना एवं प्रतिष्ठा विधि में सहयोगी अन्य विद्वान : सर्वश्री पंडित सुनील शास्त्री जैनापुरे राजकोट, राजेन्द्र कुमार जैन टीकमगढ़, आलोक शास्त्री कारंजा, धर्मेन्द्र शास्त्री कोटा, सुबोध शास्त्री शाहगढ़, रतनचंद शास्त्री ज्ञानोदय भोपाल, अशोक मांगुलकर राघोगढ़, सुनील धवल भोपाल, डॉ. सचीन्द्र शास्त्री मंगलायतन, अनिल शास्त्री खनियाँधाना, शुभम शास्त्री ज्ञानोदय भोपाल, जिनेन्द्र शास्त्री जयपुर, अमन शास्त्री आरौन, अमन शास्त्री जयपुर, संयम शास्त्री खनियाँधाना, कान्तिकुमार जैन इन्दौर, रमेश पंचौलिया सनावद, मुकेश जैन कोठादार खनियाँधाना, अविरल शास्त्री खनियाँधाना, स्वानुभव शास्त्री खनियाँधाना, पवित्र शास्त्री आगरा, समर्थ शास्त्री विदिशा, संदेश शास्त्री दिल्ली, तंदुल शास्त्री दिल्ली, आदि अनेक विद्वानों के सहयोग से सम्पन्न करावेंगे।

प्रतिष्ठा महोत्सव में पंचकल्याण संबंधी सभाओं का संचालन पण्डित अभयकुमार शास्त्री देवलाली, पण्डित संजय शास्त्री कोटा अपने सहयोगी विद्वानों सर्वश्री पण्डित ऋषभ शास्त्री छिन्दवाड़ा, अजित शास्त्री अलवर, मनीष शास्त्री पिड़ावा, डॉ. विवेक जैन छिन्दवाड़ा, प्रयंक शास्त्री खुरई, सचिन शास्त्री चैतन्यधाम, अंकित शास्त्री लूणदा, संजीव जैन उस्मानपुर, सुमित शास्त्री छिन्दवाड़ा, सम्यक शास्त्री अलवर, सुबोध जैन ग्वालियर, समकित शास्त्री खनियाँधाना, अनेकांत शास्त्री रहली के साथ करेंगे।

मंच निर्देशन का कार्यभार डॉ. विवेक शास्त्री, इंदौर सम्हालेंगे।

इस अवसर पर जैनदर्शन के मूर्धन्य विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर के प्रतिदिन प्रवचनों के अलावा, बाल ब्र. हेमंतभाई गाँधी सोनगढ़, पण्डित राजेन्द्र कुमार जैन जबलपुर, डॉ. शान्तिकुमार पाटील जयपुर, डॉ. मनीष शास्त्री मेरठ, पण्डित शैलेषभाई शाह तलोद, ब्र. हेमचन्द हेम देवलाली, ब्र. कैलाशचंद जैन अचल ललितपुर, पण्डित प्रदीप झांझरी सूरत, डॉ. राकेश शास्त्री नागपुर, डॉ. वीरसागर शास्त्री दिल्ली, पण्डित राजकुमार जैन गुना, पण्डित अशोक लुहाड़िया मंगलायतन, पण्डित राजकुमार शास्त्री उदयपुर, पण्डित विपिन शास्त्री नागपुर, डॉ. प्रवीण शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित देवेन्द्र कुमार जैन बिजौलिया, डॉ. मुकेश तन्मय विदिशा, पण्डित राकेश शास्त्री लोनी, पण्डित अश्विनभाई शाह मलाड, पण्डित कमलचन्द जैन पिडावा, पण्डित ज्ञायक शास्त्री मोरवी, पण्डित हितेशभाई चोवटिया मुम्बई, विदुषी शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई, पण्डित तेजकुमार गंगवाल इंदौर, पण्डित दिलीप बाकलीवाल इन्दौर, पण्डित मनीष शास्त्री इन्दौर, पण्डित प्रकाश छाबड़ा इन्दौर, पण्डित विकास छाबड़ा इन्दौर, पण्डित अशोक शास्त्री इन्दौर, पण्डित रवि शास्त्री केट, पण्डित सौरभ शास्त्री इन्दौर, पण्डित गौरव शास्त्री इन्दौर, पण्डित सुधीर शास्त्री इन्दौर, पण्डित दीपक शास्त्री इन्दौर आदि विशिष्ट विद्वानों को आमंत्रित किया गया है। अर्हं पाठशाला के तत्त्वावधान में अर्हं बाल शिविर का संचालन पण्डित विराग शास्त्री जबलपुर एवं पण्डित आशीष शास्त्री टीकमगढ़ अपने अनेक विद्वान साथियों के सहयोग से करेंगे।

इस अवसर पर दिनांक 24 जनवरी को कुन्दकुन्द कहान शासन प्रभावना ट्रस्ट द्वारा ढाईद्वीप के स्वप्नदृष्टा श्री मुकेश जैन इन्दौर एवं तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में अपना विशिष्ट योगदान देने वाले बाबू जुगलकिशोर युगल कोटा, पण्डित रतनचन्द भारिल्ल जयपुर, पण्डित ज्ञानचंद जैन विदिशा, पण्डित उत्तमचन्द जैन सिवनी, पण्डित वीरेन्द्रकुमार जैन आगरा, पण्डित चेतनभाई शाह राजकोट को मरणोपरान्त सम्मानित किया जावेगा एवं दिनांक 25 जनवरी को डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा डॉ. वीरसागर जैन दिल्ली एवं डॉ. संजीवकुमार गोधा जयपुर को सम्मानित किया जावेगा। मुम्बई के कलाकारों द्वारा आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के जीवन पर आधारित नाटक ''अहमेक्को खलु सुद्धो'' का मंचन एवं डॉ. हुकमचंद भारिल्ल की कृति ''वैराग्य'' पर आधारित ''वैराग्य'' नाटक का मंचन इस महामहोत्सव का विशेष आकर्षण रहेगा। **आप सभी के हृदयहार ढाईद्वीप जिनायतन में होने वाले इस मंगल आयोजन में सपरिवार इष्टमित्रों सहित पधारने हेतु हमारा वात्सल्यपूर्ण हार्दिक आमंत्रण है।**

● धर्मध्वजारोहण - श्रीमती सृष्टी-यशजी जैन, श्रीमती सोनल-मुकेशजी जैन परिवार, ढाईद्वीप इन्दौर ● प्रतिष्ठा मण्डप उद्घाटन : श्रीमान कमलजी-साकेत-सहज बड़जात्या परिवार, मुम्बई ● प्रतिष्ठा मंच उद्घाटन : श्रीमती आशा-नरेशजी लुहाडिया, श्रीमती नम्रता-आकिंचन लुहाडिया परिवार, दिल्ली ● वेदी पर विधि अध्यक्ष भगवान विराजमानकर्ता : डॉ. अशोक जैन एवं सुपुत्र पलाश - पर्युल जैन इंदौर ● वेदी पर जिनवाणी विराजमानकर्ता : श्रीमती रितु – डॉ. अशोक जैन, कृति जैन, सौम्या जैन परिवार, इंदौर ● वेदी पर मंगल कलश स्थापना-माता मरुदेवी श्रीमती कुसुमलता पाटनी, इन्दौर ● आचार्य धरसेन के चित्र अनावरणकर्ता - श्रीमती कमलप्रभा बड़जात्या परिवार, इन्दौर ● आचार्य कुन्दकुन्द के चित्र अनावरणकर्ता - श्रीमती सुषमा-कैलाशचन्द छाबड़ा परिवार, मुम्बई ● आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी के चित्र अनावरणकर्ता - श्रीमान पदम कुमार, विकास-वैभव-वरूण पहाड़िया परिवार इंदौर ● आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के चित्र अनावरणकर्ता - पण्डित शिखरचंद जैन एवं सुपुत्र डॉ. संजय-राजीव-आलोक जैन परिवार विदिशा ● श्री यागमण्डल विधान आमंत्रण, उद्घाटन एवं मंगलकलश विराजमानकर्ता - श्रीमती भारतीबेन विजयभाई जैन (हाथरस वाले) दादर मुम्बई ● आदिकुमार का प्रथम पालना झूलन : श्रीमान प्रेमचंद-सुनीता बजाज, तन्मय-चन्दा, ध्याता एवं समस्त बजाज परिवार कोटा ● राजा सोम : श्रीमान संजय दीवान परिवार, सूरत ● ढाईद्वीप जिनायतन के शिखर पर 11 फुट उतंग स्वर्ण कलश विराजमानकर्ता एवं प्रथम जन्माभिषेक कलशकर्ता : श्रीमान आदीश्वर कुमार जैन, विशु जैन, एकांश जैन एवं श्री राजेश जैन, सरिता जैन, हिमांशी जैन परिवार सूरत ● ढाईद्वीप जिनायतन के शिखर पर 13 फुट उतंग स्वर्णध्वजा विराजमानकर्ता : श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल पद्मोपुकुर कोलकाता ● मंदिर जी में एक लिफ्ट भेंटकर्ता : श्रीमान शिवकुमार - रेनू काला परिवार कोलकाता ● पूजन सामग्री प्रदानकर्ता : श्रीमती शोभना बेन-अतुलकुमार शेठ परिवार जामनगर, पंडित अशोक कुमार लुहाड़िया मंगलायतन

इन्द्र-इन्द्राणी

सौधर्म इन्द्र :श्री कमल-ऊषा पाडलिया, इन्दौर
कुबेर इन्द्रः श्री मुकेश - बबीता जैन, ग्वालियर

इन्द्र सभा के इन्द्रगण

- श्री यश - सृष्टि जैन, इन्दौर
- श्री प्रतीक - अर्चना जैन, कोलकाता
- श्री तिलक - श्वेता चौधरी, किशनगढ़
- श्री विनीत - रीना गंगवाल, जयपुर
- श्री शुद्धात्म - नैना भण्डारी, बैंगलोर
- श्री प्रशांत - स्वाति जैन, सूरत
- श्री श्रेयांस - शिखा जैन, सूरत
- श्री नवीन - कविता पाटनी, इन्दौर
- श्री तन्मय - चन्द्रा बजाज, कोटा
- श्री अजय जितेन्द्रभाई - अमिबेन अजयभाई, वाधर, जामनगर
- श्री श्रेयांस बसंतभाई - अमिबेन श्रेयांसभाई शाह, जामनगर

राजा-रानी

माता-पिताः श्री आनन्द कुमार - श्रीमती चन्द्रकांता पाटनी, इन्दौर
यज्ञ नायकः श्री प्रदीप कुमार - कुसुम चौधरी, किशनगढ़

राजसभा के राजागण

- श्री विशाल - वैशाली शाह, अहमदाबाद
- श्री अरिहंत - दिव्या चौधरी, किशनगढ़
- श्री विनय सोगानी - श्रीमती सुनीता सोगानी, इन्दौर
- श्री विरल जितेन्द्रभाई - रूचीबेन विरलभाई वाधर, जामनगर
- श्री किरीट जेठालालभाई - कुसुमबेन किरीटभाई मेहता, जामनगर
- श्री हर्षद नवीनदासभाई - किन्नरीबेन हर्षदभाई शेठ, जामनगर
- श्री जिग्नेश महेन्द्रभाई- मीनलबेन जिग्नेशभाई शाह, बोरीवली
- श्री हेतल महेन्द्रभाई- श्वेतलबेन हेतलभाई शाह, बोरीवली

भोजन सहयोगी

- लीनाबेन-हेमन्तभाई शाह यूएसए, ● श्रीमती शशि-सुरेश जैन एवं सुपुत्र भरत-डॉ. राहुल-साकेत जैन परिवार शिवपुरी
- श्री विद्याप्रकाश-संजयकुमार-अजयकुमार दीवान परिवार सूरत

प्रतिमा विराजमानकर्ता

● स्फटिकमणि 33" इंच के सीमंधर भगवान	श्री नेमिशभाई शांतिलाल शाह परिवार, मुम्बई
● स्वर्णमयी 33" के आदिनाथ भगवान	श्री अनंतराय अमुलख शेठ परिवार, मुम्बई
● रजतमयी 33" के महावीर भगवान	श्री अक्षयभाई जयंतीलाल दोशी परिवार, मुम्बई
● त्रिकाल चौबीसी विराजमानकर्ता	श्री नरेन्द्र कुमार, अरिहन्त - सिद्धेश-आचरण बड़जात्या परिवार, जयपुर
● ग्रेनाईट 33" इंच के सीमंधर भगवान	श्री सुरेशभाई रतिलाल शाह परिवार, सुरेन्द्रनगर
● 108" के खडगासन श्री भरत भगवान	श्री महेन्द्रकुमार, राहुल-विनीत गंगवाल परिवार, जयपुर
● 108" के खडगासन श्री बाहुबली भगवान	श्री प्रदीप चौधरी परिवार,किशनगढ़
● 9" के विधिनायक भगवान आदिनाथ	श्री शिवकुमार काला परिवार, कोलकाता
● मानुषोत्तर पर्वत पर 16" के स्फटिकमणि के अकृत्रिम जिनबिम्ब	1. लीना बेन - डॉ. हेमंत भाई शाह न्यूजर्सी 2. डॉ. शैलेष- मयूरी जवेरी शिकागो 3. श्रीमती रतनदेवी पाटनी सुपुत्र अशोक-आरती पाटनी परिवार, सिंगापुर 4. सी.ए. नवीन जैन दिल्ली
● ढाईद्वीप की रचना में 13" के स्फटिकमणि के सीमंधर भगवान	डॉ. भगवानदास - शारदा जैन परिवार, शिकागो

महामहोत्सव के प्रमुख सहयोगी

● श्री सीमंधर स्वामी जिनालय एवं आचार्य कुन्दकुन्द कहान दि. जैन स्वाध्याय भवन का उद्घाटन
श्रीमती शारदाबेन – शांतिलाल शाह परिवार तथा श्री अनंतराय अमुलख शेठ परिवार, मुम्बई

● श्री कानजीस्वामी अतिथि भवन, पण्डित टोडरमल विद्वत निलय, आत्मख्याति छात्रावास निर्माण सहयोगी एवं उद्घाटनकर्ता
श्रीमती शोभा रसिकलाल धारीवाल परिवार, पुणे

● ढाईद्वीप जिनालय एवं रचना उद्घाटनकर्ता
डॉ. हेमंत - लीना शाह परिवार, न्यूजर्सी (यूएसए)

● आध्यात्मिक सत्पुरूषश्रीकानजीस्वामी आडिटोरियम एवं चित्रालय उद्घाटन कर्ता :
श्रीमती शारदाबेन – शांतिलाल शाह परिवार, श्री अनंतराय अमुलख शेठ परिवार, श्री अक्षयभाई जयंतीलाल दोशी परिवार, मुम्बई एवं वाधर परिवार, जामनगर

● कुन्दकुन्दाचार्य प्रतिमा विराजमानकर्ता
श्री अशोक जैन, श्रीमती किरण जैन अरिहंत कैपिटल इंदौर

● मुख्यद्वार सीढ़ी निर्माणकर्ता
डॉ. भगवानदास - शारदा जैन परिवार, शिकागो

परम शिरोमणि संरक्षक : माननीय श्री शिवराज सिंहजी चौहान (मुख्यमंत्री मध्यप्रदेश शासन)

शिरोमणि संरक्षक

- श्री कैलाश विजयवर्गीय महासचिव, भा.ज.पा.
- श्री विश्वास सारंग, चिकित्सा शिक्षा मंत्री मध्यप्रदेश शासन
- श्री तुलसी सिलावट, जल संसाधन मंत्री मध्यप्रदेश शासन
- श्री भगवानदास सवनानी, प्रदेश महामंत्री भा.ज.पा.
- श्री शंकर लालवानी, सांसद इंदौर

परम संरक्षक

● श्री जीतू पटवारी, विधायक राऊ ● श्री संजय शुक्ला, विधायक क्षेत्र क्र.-1 ● श्रीमती मालिनी गौड़, विधायक क्षेत्र क्र.- 4 ● श्री पुष्यमित्र भार्गव, महापौर ● श्री जयपाल चावड़ा चेयरमेन आईडीए ● श्री गौरव रणदिवे, नगर अध्यक्ष भा.ज.पा. इंदौर ● श्री गोलू शुक्ला ● श्री सुरेन्द्र सिंह सोलंकी, सरपंच, ग्राम पंचायत नेनौद

संरक्षक

● श्री अशोक बड़जात्या ● श्री एम.के. जैन ● श्री पदम कुमार पहाड़िया ● श्री अशोक जैन अरिहंत केपीटल ● श्री राजकुमार पाटोदी ● श्रीमती पुष्पा प्रदीप कासलीवाल ● श्री प्रिंसिपाल टोंग्या ● श्री भरत मोदी ● श्री हसमुख गाँधी ● श्री प्रदीप बड़जात्या ● श्री मनोज प्रधान भोपाल ● इंजी. सतीश जैन ● श्री सतीश पावेचा ● श्री कैलाश वैद ● डॉ. अशोक जैन ● श्री अनिल जैन जैनको ● श्री डी.के. जैन ● श्री अनिल टोंग्या (सुगन ग्राफिक्स) ● श्री योगेन्द्र काला ● श्री मनीष गदिया

परम सहायक

● श्री जयदीप जैन ● श्री दिलीप पाटनी गोयल नगर ● श्री कमल काला ● श्री मनोज काला ● श्री अनिल गंगवाल ● श्री चंद्रप्रकाश गंगवाल ● श्री मुकेश टोंग्या ● श्री टी. के.वैद ● श्री नरेन्द्र वैद

विशेष आमंत्रित अतिथि

● श्री सुबोध जैन, प्रधान जिला एवं सत्र न्यायधीश ● श्री महेश जैन (आई.पी.एस.), डी.सी.पी. ट्रैफिक ● श्री वीरेंद्र जैन, ज्वाइंट कमिश्नर (सी.जी.एस.टी.) ● श्री सुमत जैन, कमांडेंट होमगार्ड (एस.डी.आर.एफ.) ● सोनाली जैन, डिप्टी कमिश्नर (जी.एस.टी.) ● श्री अनुराग जैन, डिप्टी कमिश्नर (जी.एस.टी.) ● सपना जैन, एडिशनल कलेक्टर (एन.वी.डी.ए.) ● श्री अगम जैन (पुलिस अधीक्षक झाबुआ) ● श्री आलोक जैन, असिस्टेंट कमिश्नर (जी.एस.टी.) ● सौम्या जैन, एडिश्नल एस.पी. (पी.टी.सी.) ● अजय जैन डी.एस.पी. (ई.ओ.डब्ल्यू.)

झंडारोहण-गर्भकल्याणक पूर्वक्रिया
शुक्रवार 20 जनवरी 2023 (माघ कृष्ण चर्तुदशी)

गर्भकल्याणक
शनिवार,21 जनवरी 2023 (माघ कृष्ण अमावस्या)

जन्मकल्याणक
रविवार, 22 जनवरी 2023 (माघ शुक्ल प्रतिपदा)

तपकल्याणक
सोमवार, 23 जनवरी 2023 (माघ शुक्ल द्वितीया)

ज्ञानकल्याणक (पूर्वार्द्ध)
मंगलवार, 24 जनवरी 2023 (माघ शुक्ल तृतीया)

ज्ञानकल्याणक (उत्तरार्द्ध)
बुधवार, 25 जनवरी 2023 (माघ शुक्ल चतुर्थी)

मोक्षकल्याणक
गुरुवार, 26 जनवरी 2023 (माघ शुक्ल पंचमी)

अध्यक्ष – श्री अनन्तभाई ए. शेठ, मुम्बई
कार्याध्यक्ष – श्री विपिन जैन शास्त्री, मुम्बई
स्वागताध्यक्ष – श्रीमती शोभा धारीवाल, पूना
सह स्वागताध्यक्ष – श्री विपुलभाई मोटानी, मुम्बई; श्री महिपाल ज्ञायक, बांसवाडा
महामंत्री – डॉ. शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल, जयपुर
वरिष्ठ उपाध्यक्ष – श्री परमात्मप्रकाश भारिल्ल, जयपुर

उपाध्यक्ष – श्री हसमुख भाई बोरा, सोनगढ़; श्री बसन्तभाई दोशी, मुम्बई; श्री अमृतभाई मेहता, अहमदाबाद; श्री सुशीलकुमार गोदिका, जयपुर; श्री अतुलभाई खारा, डलास (यू.एस.ए.); श्री स्वप्निल जैन, मंगलायतन अलीगढ़

कोषाध्यक्ष – सी.ए. शान्तिलाल गंगवाल, जयपुर
सह कोषाध्यक्ष – श्री वीनू भाई शाह, मुम्बई; श्री चिराग पाटनी, कोलकाता
निर्देशक – डॉ. संजीवकुमार गोधा, जयपुर
सह निर्देशक – श्री पीयूष जैन, जयपुर; श्री सर्वज्ञ भारिल्ल, जयपुर
सांस्कृतिक मन्त्री – श्रीमती अध्यात्मप्रभा जैन, मुम्बई; श्रीमती अनुप्रेक्षा जैन, मुम्बई
कार्यालय मंत्री – श्री अशोक शास्त्री, ढाईद्वीप, इन्दौर

एवं समस्त सदस्यगण श्रीमज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव समिति ढाईद्वीप जिनायतन, इन्दौर

अध्यक्ष – श्री अजित प्रसाद जैन, दिल्ली
कार्याध्यक्ष – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल, जयपुर
महामंत्री – श्रीमती सोनल जैन, इन्दौर

श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन शासन प्रभावना ट्रस्ट इन्दौर

ट्रस्टीगण - श्री अनंतभाई ए शेठ, श्रीमती शोभा रसिकलाल धारीवाल पूना, श्री शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल जयपुर, श्री आनंदकुमार पाटनी इंदौर, श्री प्रदीपकुमार चौधरी किशनगढ़, श्री विपिनभाई वाधर जामनगर, श्री विपिन जैन शास्त्री मुम्बई, श्री महेन्द्रकुमार चौधरी भोपाल, श्री प्रेमचन्द बजाज कोटा, श्री कमलकुमार बड़जात्या मुम्बई, श्री कैलाशचन्द छाबड़ा मुम्बई, श्रीमती जान्हवी धारीवाल पूना, श्रीमती सृष्टि जैन इन्दौर

विभिन्न विभागों की समितियाँ - आवास - रूपेन्द्र शास्त्री छिंदवाडा, सुदीप शास्त्री इन्दौर, अरविन्द शास्त्री बण्डा, दीपक जैन ओमविहार, नीशू शास्त्री सूरत, निमित्त अजमेरा इन्दौर, अक्षत शास्त्री इंदौर, अनुभव शास्त्री इन्दौर एन.आर.आई. व्यवस्था - अंनत पाटनी (USA) प्रशासन संपर्क, एवं सुरक्षा - रजत पाडलिया, मोहित पाडलिया इन्दौर यातायात - मनीष वत्सल इन्दौर, मितेश शाह अहमदाबाद, सचिन शास्त्री बण्डा, बंधन आर.जैन इन्दौर, संकल्प शास्त्री देहगांव, अजय शास्त्री बिनेका, सी.ए. अक्षत पाटनी इंदौर, प्रतीक गंगवाल इंदौर, विकास जैन, प्रशम जैन मौ भगवान विराजमान व्यवस्था - अध्यात्मप्रकाश भारिल्ल मुम्बई, अचिन्त्य शास्त्री बन्डा, अंकुर शास्त्री मैनपुरी शोभायात्रा - आशीष शास्त्री टीकमगढ़, श्रेयांश शास्त्री अभाना, राकेश जैन ओमविहार भोजनशाला विभाग - खरीददारी - मनोज पाटनी, राजेश शाह, आशीष अजमेरा, विजय जैन हिन्दी भोजन - पंकज काला ओमविहार, मुकेश जैन, गौरव शास्त्री जयपुर, अभिनय शास्त्री कोटा एवं दि. जैन समाज एवं महिला मण्डल ओमविहार गुजराती भोजन - प्रवीण शाह मलाड, प्रतीक शास्त्री अहमदाबाद विद्वान एवं विशिष्ट अतिथि भोजन - पण्डित नागेश जैन पिडावा, उर्विश शास्त्री पिडावा, पण्डित अमित अरिहन्त मड़ावरा, प्रमोद जैन दिल्ली, प्रमोद पहाडिया एवं दि. जैन समाज एवं स्वाध्याय मंडल रामचन्द्रनगर शोध भोजन - सुमतिलाल लूणदिया बाँसवाड़ा, पण्डित सतीश कासलीवाल ओमविहार, अशोक पाटनी रामचन्द्र नगर, पण्डित अभिषेक शास्त्री, अ.भा. जैन युवा फैडरेशन खनियाँधाना त्यागीव्रति भोजन - श्री जिनेश जैन अलवर स्टोर इन्चार्ज - श्रीमंत नेज, जयपुर चिकित्सा विभाग - अनुभव भारिल्ल जयपुर, ज्ञायक शास्त्री अमरमऊ एवं W.H.C. टीम जयपुर कलश, धोती, दुपट्टा वितरण - जिनेन्द्र जैन (अलवर वाले) अहमदाबाद, संजय सिद्धार्थी इंदौर हेल्पलाइन/पूछताछ - श्री प्रदीप पाटनी इंदौर, मयंक अलीगढ़, अमित शास्त्री इन्दौर भोजन कूपन, फूड काउंटर एवं बाजार व्यवस्था - प्रमोद पहाडिया इन्दौर, अमित अजमेरा विद्वान एवं विशिष्ट अतिथि व्यवस्था - जिनकुमार शास्त्री जयपुर, विवेक संघवी इंदौर, विकास शास्त्री इन्दौर, चिन्मय शास्त्री, नीतेश शास्त्री निर्माण विभाग - इंजी. संजय जैन गुरहा जयपुर एवं जैन इंजीनियर सोसायटी Live Telecast - सुदीप शास्त्री इन्दौर, आकाश दादा जयपुर Ontos - अनुभव प्रकाश भारिल्ल जयपुर IT एवं प्रचार विभाग - आकाश अमायन, आभास जैन जबलपुर वित्त विभाग - सी.ए. आमोद पहाडिया इन्दौर, सी.ए. प्राजंल जैन इंदौर, सी.ए. अर्चित जैन खनियाधाना, सी.ए. शुभम जैन मंगलार्थी, नीरज जैन ढाईद्वीप, दिनेश शाह उज्जैन, कान्तिलाल इन्दौर प्रचार विभाग - डॉ. अखिल बसंल जयपुर, अखिल शास्त्री मंडीदीप, दीपकराज जैन छिन्दवाडा, प्रद्युम्न जैन बड़ामलहरा, सचिन जैन खनियाँधाना, अरुण बाकलीवाल इंदौर, मनीष अजमेरा इंदौर नाट्य मंचन एवं वीडियोग्राफी - श्रीमती मुक्ती शास्त्री पुणे सांस्कृतिक कार्यक्रम- श्रीमती स्तुति जैन, श्रीमती पूजा शास्त्री, सर्वदर्शी भारिल्ल, श्रीमती श्रद्धा जैन ढाईद्वीप इंदौर कार्यालय विभाग - प्रेम कुमार, संजय जैन ढाईद्वीप इंदौर प्रतिष्ठा स्टोर - राकेश नायक ग्वालियर, राजकुमार जैन बरगी।

कार्यक्रम स्थल - ढाईद्वीप जिनायतन गोम्मटगिरी सर्किल, गाँधी नगर, इन्दौर /Dhaidweep Indore /+91 93437 00891 www.dhaidweep.com